निष्पक्ष समाचार ज्योति

(हिन्दी दैनिक)

मंगलवार, 12 जुलाई, 2016

पुरातात्विक चेतावनी

धंस सकता है कामाख्या देवालय

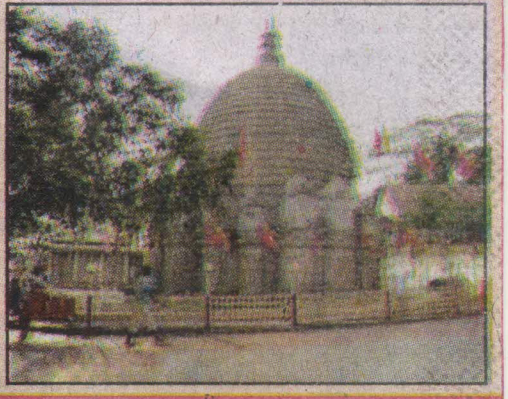

▼ सुदीप शर्मा चौधरी

गुवाहाटी। शक्तिपीठ कामाख्या देवालय किसी भी समय धंस सकता है। दसवीं शताब्दी में बने इस ऐतिहासिक मंदिर की दीवारें कमजोर हो गई हैं तथा मुख्य मंदिर के ऊपरी हिस्से पर दो फीट का अतिरिक्त सीमेंट का लेयर है, जिससे मंदिर का वजन बढ़ गया है। इस बीच शिक्षा विभाग की ओर से भारतीय पुरातत्व विभाग के गुवाहाटी सर्किल को एक पत्र मिला है, जिसमें कामाख्या मंदिर में दरार पड़ने का जिक्र करते हुए विभागीय हस्तक्षेप की अपील की गई है। भारतीय पुरातत्व विभाग के गुवाहाटी सर्किल के सुपरटेंडिंग आर्कियोलॉजिस्ट डा. मिलन कुमार चौले ने शिक्षा विभाग से पत्र मिलने की बात स्वीकार करते हुए कहा कि कामाख्या देवालय काफी पुराना हो गया है तथा वैज्ञानिक नजरिए से इसका संरक्षण जरूरी हो गया है। चौले ने बताया कि लगभग दसवीं शताब्दी में मंदिर का निर्माण किया गया था। इसके बाद से मंदिर का तीन बार पुनर्निर्माण किया गया है। कोच राजाओं द्वारा 14वीं शताब्दी में मदिर की पहली बार मरम्मत की गई। इसके बाद आहोम राजाओं ने मंदिर का पुनर्निर्माण. ■ *शेष पेज दो पर*

धंस सकता है कामाख्या ....

कराया। मुख्य मंदिर के ऊपरी हिस्से में दरार पड़ने के बाद बिड़ला की ओर से मंदिर की मरम्मत करवाई गई। इस दौरान मंदिर के ऊपरी हिस्से की दरार को सीमेंट से भर दिया गया। यही सीमेंट फिलहाल मंदिर के लिए सबसे बड़ा खतरा बना हुआ है। चौले ने कहा कि दरार को सीमेंट की जगह चूना से भरना चाहिए था। चौले के अनुसार, कामाख्या मंदिर संपूर्ण रूप से पत्थर से बना हुआ है तथा पत्थरों को आपस में जोड़ने के लिए लोहे की छड़ का इस्तेमाल किया गया है। इसके अलावा चूना पत्थर भी लगाया गया है।